International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 5.401 Volume 6, Issue 1, January 2019
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

बहुआयामी व्यक्तित्व पंडित रामाश्रय झा 'रामरंग'

डा0 अम्बिका कश्यप
अस्टिैंट प्रोफेसर, संगीत वादन विभाग
जी.एन.जी कॉलेज, यमुना नगर

भारत ऋषियों, मनीषियों तथा संतों का देश है। भारत के हर क्षेत्र में गुरूओं ने सदैव अपना वर्चस्व स्थापित किया है। इसमें जहाँ ऋषि वेद व्यास, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी दयांनद सरस्वती, स्वामी विवेकानन्द, गुरू नानक देव जैसे अनेक संतों ने जन्म लिया तो वहीं कबीरदास, रैदास, गुरू विश्वामित्र, गुरू वशिष्ट तथा गुरू परशुराम जैसे अनेक धर्म गुरूओं ने समाज के पथ–प्रदर्शक बन पूरे समाज का मार्गदर्शन किया है। चाणक्य से लेकर चरक तक हर शास्त्र में, हर विषय में इन ऋषियों ने गुरुओं ने अपनी अद्वैत प्रतिभा का प्रदर्शन कर दुनिया को आश्चर्यचकित किया है। गुरूओं के इसी त्याग, परिश्रम के कारण भारतीय संस्कृति सर्वोच्च मानी गई है। इतिहास साक्षी है कि सांगीतिक प्रतिभाओं में स्वामी हरिदास, तानसेन, बैजू बावरा, भरत, मंतग, शारंगदेव, क्रांतिकारी विष्णु नारायण भातखंडे तथा विष्णु दिंगबर जैसे युगपुरूषों ने संगीत से ईश्वर प्राप्ति के मार्ग को सरल तो किया ही है, वहीं शास्त्रीय संगीत को जन–मानस तक सरलतम रूप में प्रस्तुत कर अपना जीवन समर्पित किया है। पिछले वर्षों में हिन्दुस्तानी संगीत ने जो उपलब्धियां अर्जित की है वो एक कीर्तिमान है। रागों की उत्तम विविधता, अनेक तालों की अतिसूक्ष्मता और संकुलता, कंठ तथा वाद्यशैलियों और अविस्मयकारी भिन्नता–सांगीतिक प्रयोगों की सिर्फ कौतुक नहीं है बल्कि उनके रचनाकारों की सांगीतिक अन्तः प्रसार और रचनात्मक प्रतिभा के प्रति सादराजंलि भी है। इसी कड़ी में आधुनिक युग के युगपुरूष, संगीत आचार्य, संगीत मनीषी, उत्तम गायक, कलाकार, वाग्गेयकार पं0 रामाश्रय झा 'रामरंग' उन महापुरूषों में से है, जिन्होंने जीवन पर्यन्त संगीत से समाज की सेवा की।

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

असाधरण प्रतिभा सम्पन्न विद्ववान, कलाकार पं0 'रामरंग' जिन्होंने अपनी प्रतिभा से न केवल देश को बल्कि विश्व को गौरवशाली बनाया। एक सफल कलाकार, लेखक, नाटय अभिनेता, कार्यक्रम आयोजक, सृजनकार तथा इन सभी से ऊपर आदर्श गुरू के रूप मे स्वयं को प्रस्तुत कर सांगीतिक कला क्षेत्र में अपना योगदान दिया। रामाश्रय का संपूर्ण जीवन संघर्षमयी रहा। रामलीला मंडली से शुरू हो कर 'प्रयाग संगीत समिति' इलाहाबाद तथा 'संगीत विश्वविद्यालय' इलाहाबाद तक पहुँचने की उनकी अनूठी यात्रा किसी से कम नहीं। 1 जनवरी सन् 2009 ई0 को यह चमकता हुआ सितारा मानवीय वस्त्रों को त्यागकर हमेशा के लिये पंचतत्वों मे लीन हो गया और उनके साथ ही संगीत इतिहास का एक बहुआयामी अघ्याय समंपूर्णता को प्राप्त हुआ। एक ऐसे स्वप्नद्रष्टा जिनके समान व्यक्तित्व कई सदियों बाद जन्म लेते हैं। उनके लिए संगीत साघ्य था व श्रम का प्रतीक था। संगीत के प्रति धर्मिक दृष्टिकोण से उनकी अन्तरात्मा इतनी अभिभूत थी कि उससे उद्भूत होने वाला संगीत ऐसा लगता था कि मानों वह धर्मिक उत्तेजना से अनुप्राणित हो और वह संगीत श्रोता को अंर्तमुखी बना देता था। उनके गायन में गांभीर्य, कारूण्य, समर्पण, आराधना, शांति जैसे सभी भावों को सहज रूप से आत्मसात किया जा सकता था। उनके गायन में चैनदारी, विस्तार में मूल आत्मा का निर्वाह, एक–एक स्वर का माघुर्य विशेष रूप से परिलक्षित होता था। जिन लोगों ने उनके गायन को सुना है वे उनकी विशेषताओं जैसे गहन और ओजपूर्ण स्वरों में अगाध रूप से प्रेरक तान और उनके संगीत की विनम्रता के गुण को भी व्याकुलता के साथ याद करते है। उनका संगीत आमतौर पर श्रोताओं के मन में उतर जाता और उन्हें पता भी नहीं चलता था।

पं0 जी की गायकी किसी एक घराने की मोहताज नहीं थी। अपने संगीत को उन्होंने लकीर का फकीर नहीं बनने दिया। झा जी ने अपनी संगीत यात्रा के पीछे अत्यंत कष्टसाघ्य जीवन के उतार–चढ़ाव देखें। पिछले चार दशकों मे संगीत जगत में विष्णुनारायण भातखंडे तथा दिगंबर की भूमिका निभाने वाले तथा समूचे संगीत जगत की अलख जगाने वाले बहुआयामी व्यक्तित्व पं0 जी ने अपने अन्तिम श्वास तक संगीत की आराधना की। पं0 जी ने संगीत विषयक कई महत्वपूर्ण पुस्तकें भी लिखी। संगीत विषय की गहराई का अत्यंत सुस्पष्ट चित्र अपने मस्तिष्क मे रखकर पंडित जी ने सर्वसामान्य विद्यार्थियों के लिये पांच खण्डों में 'अभिनव गीतांजलि' का निर्माण किया। इन खण्डों में रागों को शास्त्र पक्ष की दृष्टि

से अत्यंत सुबोध बनाया है। शास्त्रीय संगीत की बुद्धिगम्यता तथा सुन्दरता का प्रत्यक्ष प्रदर्शन करने के लिए रास्ते भी बताये। खुद कितना भी संघर्षमयी जीवन जिया किन्तु किराये के छोटे से कमरे में रहते हुये भी बच्चों को संगीत की शिक्षा दी और नित नई से नई बंदिशों का निर्माण किया। धीरे–धीरे शास्त्रीय संगीत में हज़ारों बदिशों की रचना कर डाली। छोटा ख्याल, बड़ा ख्याल, तराना , चतुरंग, त्रिवट, रागमाला, ठुमरी, दादरा ,झूला आदि सभी कुछ।

ज्ञान अर्जित करने के लिए विद्यालयीन शिक्षा ग्रहण नहीं की, किन्तु उनकी रचनाओं में साहित्यिक ज्ञान की कोई कमी नहीं थी। रासलीला तथा रामलीला वाली मंडलियों में गाते–सीखते पूरी रामायण ;रामचरित मानस उन्हें कंठाग्र हो गई थी। यही उनकी साहित्यिक शिक्षा–दीक्षा की मूल पूंजी रही।

गोरा, नारा, गुलाबी तेजोमय मुखड़ा, शुभ्रवसन, आर्कषक व्यक्तित्व, माथे पर तिलक, साधू का वेश, पांव में खडाऊ तथा छोटा कद, तेजपूर्ण प्रसन्न वदन, स्वच्छ और शुद्धवाणी, चिकित्सक बुद्धि तथा शांत स्वभाव के धनी रामाश्रय शास्त्रीय संगीत के अभ्यासको के लिए एक आदर्श छोड़ गये। झा जी का जीवन 'रामायण' से प्रेरित था। सादा जीवन, शाकाहारी भोजन, मनस्वीपन, अंतर्मुखता, एक प्रकार की फक्कड़–फकीरी वृति, अतिशय उत्स्फूर्त वाचा और संगीत की किसी भी समस्या का उत्कट निराकरण करना उनकी विशेषता थी। मीठी वाणी, भरपूर विनम्रता, परम वातसल्य, किसी से भी मिलते तो उसे पल में अपना बना लेने की खूबी तो कूट–कूटकर भरी थी।

संगीत जगत से जुड़े लोगों के लिए चाहे वह कलाकार हो चाहे श्रोता, मंच या स्टेज एक सशक्त माध्यम है अपने मनोभावों को प्रकट करने का। कलाकार अपने ह्दय की सूक्ष्म से सूक्ष्म अभिव्यक्ति व भाव को श्रोताओं के समक्ष रखते है और आनन्द की अनुभूति करवाते है। झा जी के गायन में सारांश, शास्त्रीयता, रसमयता एवं बुद्धिगमयता इनका त्रिवेणी संगम था। भाषा में 'काकु' यानि स्वर भेद को ही वे मुख्य रूप से अभिव्यक्ति का कारण मानते थे, इसलिये अक्सर कहा करते थे स्वर के बिना शब्द पंगु है। शब्द के बिना केवल स्वर के माध्यम से भी भाव प्रकट किया जा सकता है, फिर भी उन्होनें शब्द की महत्ता को नकारा नहीं अपितु शब्द का उनके यहाँ काफी महव रहा।

आज कुछ कलाकारों के गायन, वादन में कलापक्ष की प्रबलता एवं खूब तैयारी से श्रोताओं को चमत्कृत करने की प्रवृति पाई जाती है। उनके गायन में प्रायः भावपक्ष का अभाव

पाया जाता है। यह प्रवृति मस्तिष्क को तो प्रभावित करती है परन्तु आत्मिक आनंद प्रदान करने में असमर्थ है। इस प्रकार के गायन का प्रभाव कुछ समय के लिये होता है, यह आंशिक ही होता है दीर्घ कालिक नहीं। झा जी के गायन की विशेषता रही कि उनके गायन मे स्वर, लय, ताल के प्रस्तुतीकरण की विशिष्टताओं पर उनका खास ध्यान रहता था। झा जी ने गायन में ख्याल तथा ध्रुवपद दोनों अंगो का समन्वय किया। ध्रुवपद शैली से गायन करते समय वे खटके तथा मुर्की का प्रयोग नही करते थे परन्तु ख्याल गायन प्रस्तुत करते समय वे खटका, मुर्की, मींड, गमक इत्यादि का खूब प्रयोग करते थे। झा जी के सांगीतिक गुणों, सृजनशीलता एवं दीर्घ अनुभव की चर्चा संगीत समाज एवं सगीत से जुडे प्रत्येक वर्ग में होती हैं परन्तु संगीत में जुड़े लोगो में ऐसा मानवीय व्यक्तित्व विरला ही होगा जिसमें सहजता, सरलता, सांगीतिक चिन्तन, गुणवत्ता मानो कूट–कूटकर भरी हो। पं0 जी अपने संगत कलाकारों के साथ न केवल तालमेल बनाकर अपनी प्रस्तुति देते अपितु उनके गौरव तथा मान सम्मान की भी भरपूर रक्षा करते। उनका विश्वास था कि गायक, वादक या संगतकार एक–दूसरे के पूरक है और सफल कार्यक्रम का रहस्य दोनों का परस्पर सहयोग है।

झा जी ने गुरूवर पं0 भोलानाथ भटट् जी के सरंक्षण में ध्रुवपद, धमार, ख्याल, ठुमरी और दादरा इन चार पाट की गायन शैलियों की विधिवत शिक्षा ग्रहण की। प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक समय तक बहुत कम ऐसे कलाकार हुये जो चारों पट के ज्ञाता हो । पं0 जी ने न केवल घ्रुवपद, ख्याल, अपितु दादरा, टप्पा, तराना, त्रिवट, चतुरंग, रागमाला, रागसागर, झूला को भी रोचक ढंग से प्रस्तुत किया। टप्पा शैली कठिन गायकी है किन्तु झा जी इसमें खटके, मुर्की, द्रुत लय की छोटी –छोटी तानों का प्रयोग सहज ही कर जाते ।

'अभिनव गीताजंलि' तथा 'संगीत रामायण' पं0 जी के अभूतपूर्व ग्रन्थ है। इन ग्रन्थों की रचना का परम उददेश्य यही था कि वर्षो की कड़ी तपस्या से जो कुछ भी झा जी ने गुरूओं से सीखा उसे उपनी पुस्तकों में छपवा दिया, चाहे वह राग का क्रियात्मक पक्ष हो चाहे शास्त्रात्मक, झा जी ने उसे बाँटने में कोई कसर नहीं छोड़ी। वो खुद भी उन्हीं जिज्ञासुओं में से थे जो सही गुरू के मिलने तक इधर–उधर कई दिशाओं मे भटके ।

'शास्त्रीय संगीत के अधिकतर घरानेदार गुणीजनों की ये परम्परा रही कि प्रतिभा सम्पन्न शिष्यों को भी वे उदारता से विद्या देने में कतराते हो। इसके अनेक उदाहरण है तथा अनुदारता के भुक्त भोगियों में से एक मैं भी हूँ।'

पं0 जी का जीवन 'रामायण' से प्रेरित था। भगवान श्री राम का उनके जीवन में बहुत प्रभाव था। राम लीला मंडलियों मे अभिनय करते–2 मानो वह खुद 'राममय' रंग गये हो और शायद इसी कारण हर बंदिश को भगवान राम को समर्पित करते हुये 'रामरंग' उपनाम की संज्ञा दे दी।

'अभिनव गीताजंलि' के पाँच भागों मे कुल 190 रागों की व्याख्या की गई है। हर राग का पहले शास्त्रात्मक विवरण, तुलनात्मक विवेचन तथा भिन्न–2 तालों की बंदिशें प्रस्तुत की । झा जी इलाहाबाद संगीत विश्वविद्यालय से सेवानिवृत होने के बाद 'संगीत रामायण' ग्रंथ की रचना मे संलग्न हो गये। उनका यह अनुपम तथा अनूठा प्रयास था कि 'रामायण' जैसे ग्रंथ के सातों काण्डों का स्वरलिपिकरण इतनी सरलता से प्रस्तुत किया। रामकथा के अलग–2 प्रसंगो को लेकर असंख्य बंदिशें बनाई। ध्रुवपद एवं ख्याल शैली मे सातों काण्डों मे स्वरचित बंदिशों को न केवल रचा अपितु स्वरलिपिबद्व भी किया। 'राग शास्त्र' भाग एक व दो तथा 'राग मल्हार दर्शन' झा जी की वरिष्ठ ि"ाष्या डा0 गीता बनर्जी द्वारा उन्हीं के मार्गद"ान में लिखी गई। जिसमें स्नातक ,संगीत विशारद तथा उनके समकक्ष कक्षाओं के रागों का विस्तृत विवेचन किया है। 'राग मल्हार दर्शन' में मल्हार के 35 प्रकारों का वर्णन किया गया है।

रागों का साहित्यिक पक्ष–: हर राग का प्राचीन स्वरुप, वादी–संवादी, पूर्वाग तथा उतरांग, रागों के गायन–समय, संगति, राग पूर्णतः शुद्व रुप में है अथवा उसमें अन्य रागों का मिश्रण है आदि का विवरण प्रस्तुत किया गया है। राग में कोई स्वर दुर्बल है या किस स्वर का अधिक प्राबल्य है। स्वरों की वक्रता है या नहीं, राग की बंदिश में स्थाई तथा अंतरे का उठाव ,उसी थाट के अर्न्तगत आने वाले अन्य रागों से किस प्रकार की समानता अथवा भिन्नता, एक से आरोह–अवरोह होने पर भी अंग प्रबलता से राग पर होने वाला प्रभाव इन सभी तथ्यों को समक्ष रखकर ही उन्होंने एक–2 राग का शास्त्रात्मक स्वरुप स्पष्ट किया है। राग में वादी, संवादी, विवादी तथा अनुवादी स्वरों का महत्व, लंघन अल्पत्व तथा अलंघन बहुत्व, आंशिक न्यांस बहुत्व, सर्वांग न्यास अथवा संपूर्ण न्यांस जैसे तत्वों का तर्कसंगत विश्लेषण झा जी द्वारा किया गया।

प्रबुद्ध वाग्गेयकार : एक वाग्गेयकार के द्वष्टिकोण से पंडित जी का मानना था कि रागों का निर्माण नही किया जा सकता वह सदैव अस्तित्व मे रहते है, जरूरत है तो उन्हें खोजने की। झा जी उठते–बैठते, सोते–जागते सदैव संगीत के सुरों मे ही खोये रहते, रागों

का जैसे एक संसार ही उन्होंने अपने इर्द–गिर्द बना रखा था । लोक संगीत के प्रति उनका एक विशेष झुकाव था । वह मानते थे कि शास्त्रीय संगीत के पुष्प लोक संगीत की धरती पर ही खिले है। उनका गायन परिष्कृत, सुश्रव्य और परिशुद्व था। उनकी स्वर संरचनाएं गतिमान प्रभावकारी मींड तथा तानों से दीप्तिमान थी। उनका लय संकलन भी विलक्षण था।

एक वाग्गेयकार के सभी गुणों से अभिभूत पं0 जी का व्यक्तित्व जीवन पर्यन्त दूसरो को शास्त्रीय संगीत के लिये प्रेरित करता रहा। स्वयं ही शब्दो का चयन फिर उनकी अलग–2 रागों में रचनायें तथा उनका गायन सभी अदभुत। एक विलक्षण उपजकार थे पंडित जी। उनके जैसा वाग्गेयकार वस्तुतः युगों बाद जन्म लेता है।

झा जी के जीवन की सबसे बडी पूंजी थी उनकी शिष्य परंपरा । उनके शिष्यों की एक लम्बी सूची है। जिनमें पदमश्री शुभा मुदगल, डा0 गीता बनर्जी, पं0 शान्ताराम विष्णु कशालकर, स्व0 डा0 कमला बोस, स्व0 डा0 सुनीता भाले, डा0 रामंशकर सिहं, डा0 हरीश सलूजा, श्रीमती सत्यादास, श्री रोबिन चटर्जी ,श्रीमती लता मालवीय, स्व0 श्री कामता खन्ना, आदि।

सदैव एक गहन चिंतक के रुप मे जिये पं0 जी। उनका व्यक्तित्व सामान्य रुप से परस्पर विरोधी दिखाई देने वाले गुणों, धर्मो और भावो का विलक्षण संगम था। उनके कण्ठ में, कला में, संगीत में, हिमालय की सी गंभीरता, सागर की अतल गहराई, सूर्य का प्रचण्ड तेज, चन्द्रमा की शीतलता,ऊषा की जागृति और संध्या का विषाद, प्राची दिशा की कमनीयता तथा विकास और पश्चिम दिशा का अवसाद, बसन्त का उल्लास और वर्षा की भीना सूनापन, उमड़ घुमड़कर घिरते–गरजते मेघों का गर्जन और रिमझिम बरसती फुहारों की सिहरन, रात्रि की नीरव शान्ति और दिन की मुखरता, पुरुष का बल और स्त्री की मर्यादा थी। उनमें भक्त का हदय, कलाकार की कला, गुरु का चारित्रिकबल, साध्क की साध्ना, तपस्वी का तप, बालक की चंचलता, युवा का उत्साह, वृ(की अनुभव परिपक्वता थी। इलाहाबाद संगम की धरती पर त्रिवेणी साहित्य, संगीत
तथा कला इन तीनों का अनूठा संगम थे।